ये जीवन है क्‍या, तेरे बिना मसीहा

मार्ग ढूँढ़ता हूँ,

जिसमें की तू चलाये (2)

1. पहले मन में सोचा,

फिर दिल में मेरे जागा

अर्पण मैं करता हूँ तुझको

जीवन ये मेरे मसीहा

2. अब दिल की चाह यही है

तुझ में डूबा रहूँ मैं

मिलता रहे साथ तेरा,

और कृपा महान